

रविवार 15 मार्च, 2026

विषय — पदार्थ

स्वर्ण पाठ: नीतिवचन 10: 22

"धन यहोवा की आशीष ही से मिलता है, और वह उसके साथ दुःख नहीं मिलाता।"

उत्तरदायी अध्ययन: इब्रानियों 11: 3, 8, 10, 24-27

- ³ विश्वास ही से हम जान जाते हैं, कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। यह नहीं, कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।
- ⁸ विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूँ; तौभी निकल गया।
- ¹⁰ क्योंकि वह उस स्थिर नेव वाले नगर की बाट जोहता था, जिस का रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है।
- ²⁴ विश्वास ही से मूसा ने सयाना होकर फिरौन की बेटी का पुत्र कहलाने से इन्कार किया।
- ²⁵ इसलिये कि उसे पाप में थोड़े दिन के सुख भोगने से परमेश्वर के लोगों के साथ दुख भोगना और उत्तम लगा।
- ²⁶ और मसीह के कारण निन्दित होने को मिसर के भण्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उस की आंखे फल पाने की ओर लगी थीं।
- ²⁷ विश्वास ही से राजा के क्रोध से न डर कर उस ने मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह अनदेखे को मानों देखता हुआ दृढ़ रहा।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 36: 7-9

- ⁷ हे परमेश्वर तेरी करूणा, कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।
- ⁸ वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा।
- ⁹ क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे॥

2. भजन संहिता 139: 14, 15, 17

- 14 मैं तेरा धन्यवाद करूंगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूँ। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूँ।
- 15 जब मैं गुप्त में बनाया जाता, और पृथ्वी के नीचे स्थानों में रचा जाता था, तब मेरी हड्डियां तुझ से छिपी न थीं।
- 17 और मेरे लिये तो हे ईश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है॥

3. 2 राजा 4: 1-7

- 1 भविष्यद्वक्ताओं के चेलों की पत्नियों में से एक स्त्री ने एलीशा की दोहाई देकर कहा, तेरा दास मेरा पति मर गया, और तू जानता है कि वह यहोवा का भय माननेवाला था, और जिसका वह कर्जदार था वह आया है कि मेरे दोनों पुत्रों को अपने दास बनाने के लिये ले जाए।
- 2 एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिये क्या करूँ? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है? उसने कहा, तेरी दासी के घर में एक हांडी तेल को छोड़ और कुछ तहीं है।
- 3 उसने कहा, तू बाहर जा कर अपनी सब पड़ोसियों खाली बरतन मांग ले आ, और थोड़े बरतन न लाना।
- 4 फिर तू अपने बेटों समेत अपने घर में जा, और द्वार बन्द कर के उन सब बरतनों में तेल उण्डेल देना, और जो भर जाए उन्हें अलग रखना।
- 5 तब वह उसके पास से चली गई, और अपने बेटों समेत अपने घर जा कर द्वार बन्द किया; तब वे तो उसके पास बरतन लाते गए और वह उण्डेलती गई।
- 6 जब बरतन भर गए, तब उसने अपने बेटे से कहा, मेरे पास एक और भी ले आ, उसने उस से कहा, और बरतन तो नहीं रहा। तब तेल थम गया।
- 7 तब उसने जा कर परमेश्वर के भक्त को यह बता दिया। ओर उसने कहा, जा तेल बेच कर ऋण भर दे; और जो रह जाए, उस से तू अपने पुत्रों सहित अपना निर्वाह करना।

4. नीतिवचन 3: 9, 10

- 9 अपनी संपत्ति के द्वारा और अपनी भूमि की पहिली उपज दे देकर यहोवा की प्रतिष्ठा करना;
- 10 इस प्रकार तेरे खत्ते भरे और पूरे रहेंगे, और तेरे रसकुण्डोंसे नया दाखमधु उमण्डता रहेगा॥

5. मत्ती 4: 23

- 23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

6. मत्ती 5: 1 (और जब), 2

- 1 ... और जब बैठ गया तो उसके चले उसके पास आए।
- 2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

7. मत्ती 6: 19-21, 24, 25, 30-34 (से 1st .)

- 19 अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं।
- 20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं।
- 21 क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।
- 24 कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर ओर दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
- 25 अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?
- 30 इसलिये जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों, तुम को वह क्योंकर न पहिनाएगा?
- 31 इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे?
- 32 क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए।
- 33 इसलिये पहिले तुम उसे राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।
- 34 सो कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुख बहुत है॥

8. 2 कुरिन्थियों 5: 1-9

- 1 क्योंकि हम जानते हैं, कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थायी है।
- 2 इस में तो हम कराहते, और बड़ी लालसा रखते हैं; कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें।
- 3 कि इस के पहिनने से हम नंगे न पाए जाएं।
- 4 और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं; क्योंकि हम उतारना नहीं, वरन और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए।
- 5 और जिस ने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है।
- 6 सो हम सदा ढाढ़स बान्धे रहते हैं और यह जानते हैं; कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं।
- 7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
- 8 इसलिये हम ढाढ़स बान्धे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं।
- 9 इस कारण हमारे मन की उमंग यह है, कि चाहे साथ रहें, चाहे अलग रहें पर हम उसे भाते रहें।

9. कुलुस्सियों 3: 1, 2

- 1 सोजब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।
- 2 पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

10. रोमियो 8: 28

- 28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 468: 16-24

सवाल — पदार्थ क्या है?

उत्तर — पदार्थ वह है जो अनादि है और कलह और क्षय से असमर्थ है। सत्य, जीवन और प्रेम पदार्थ हैं, क्योंकि इब्रानियों में इस शब्द का उपयोग होता है: "विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।" आत्मा, मन, आत्मा या ईश्वर का पर्यायवाची एकमात्र वास्तविक पदार्थ है। व्यक्ति सहित आध्यात्मिक ब्रह्मांड, एक यौगिक विचार है, वह आत्मा के दिव्य पदार्थ को दर्शाता है।

2. 516: 4-8

पदार्थ, जीवन, बुद्धि, सत्य और प्रेम, जो देवता का निर्माण करते हैं, उनकी रचना से परिलक्षित होते हैं; और जब हम विज्ञान के तथ्यों के प्रति कॉर्पोरल इंद्रियों की झूठी गवाही देते हैं, तो हम इस वास्तविक समानता और प्रतिबिंब को हर जगह देखेंगे।

3. 124: 14-19, 25-26 (से 1st.)

ब्रह्मांड, मनुष्य की तरह, विज्ञान द्वारा अपने दिव्य सिद्धांत, ईश्वर से व्याख्या की जानी है, और फिर इसे समझा जा सकता है; लेकिन जब भौतिक अर्थों के आधार पर समझाया जाता है और विकास, परिपक्वता और क्षय के विषय के रूप में प्रतिनिधित्व किया जाता है, तो ब्रह्मांड, जैसे मनुष्य, है और होना चाहिए, एक रहस्य है।

आत्मा सभी चीजों का जीवन, पदार्थ और निरंतरता है।

4. 278: 4-22

आत्मा ही एकमात्र पदार्थ और चेतना है जिसे दिव्य विज्ञान द्वारा मान्यता प्राप्त है। भौतिक इंद्रियां इसका विरोध करती हैं, लेकिन कोई भौतिक इंद्रियां नहीं हैं, क्योंकि पदार्थ का कोई मन नहीं है। आत्मा में कोई पदार्थ नहीं है,

जैसे सत्य में कोई त्रुटि नहीं है, और अच्छाई में कोई बुराई नहीं है। यह एक झूठा अनुमान है, यह धारणा कि वास्तविक पदार्थ है, आत्मा के विपरीत है। आत्मा, ईश्वर, अनंत है, सब कुछ है। आत्मा का कोई विपरीत नहीं हो सकता।

नश्वर की झूठी मान्यताओं में से एक यह है कि सामग्री पर्याप्त है या जीवन और संवेदना है, और केवल एक समरूप नश्वर चेतना में मौजूद है। इसलिए, जैसा कि हम आत्मा और सत्य से संपर्क करते हैं, हम पदार्थ की चेतना खो देते हैं। यह मानते हुए कि भौतिक पदार्थ हो सकता है, एक और प्रवेश की आवश्यकता है, - अर्थात्, आत्मा अनंत नहीं है और यह मामला आत्म-रचनात्मक, आत्म-अस्तित्व और शाश्वत है। इससे यह होगा कि दो शाश्वत कारण हैं, एक दूसरे के साथ हमेशा के लिए युद्ध करना; और फिर भी हम कहते हैं कि आत्मा सर्वोच्च और सर्व-उपस्थिति है।

5. 301: 17-29

जैसा कि ईश्वर पदार्थ है और मनुष्य ईश्वरीय छवि और समानता है, मनुष्य को आत्मा के पदार्थ की इच्छा करनी चाहिए, केवल पदार्थ की, न कि पदार्थ की और वास्तव में उसने ऐसा किया है। यह विश्वास कि मनुष्य के पास कोई अन्य पदार्थ या मन है, आध्यात्मिक नहीं है और पहले आज्ञा को तोड़ता है, आप एक ईश्वर को, एक मन को स्वीकार करेंगे। नश्वर मनुष्य खुद को भौतिक पदार्थ लगता है, जबकि मनुष्य "छवि" (विचार) है। भ्रम, पाप, बीमारी और मृत्यु भौतिक अर्थों की झूठी गवाही से उत्पन्न होती है, जो कि अनंत आत्मा की केंद्रीय दूरी के बाहर एक निश्चित दृष्टिकोण से, मन और पदार्थ की एक उलटी छवि प्रस्तुत करता है और सब कुछ उल्टा हो जाता है।

6. 530: 5-12

दिव्य विज्ञान में, मनुष्य ईश्वर के द्वारा कायम है, होने का दिव्य सिद्धांत। परमेश्वर के आदेश पर पृथ्वी, मनुष्य के उपयोग के लिए भोजन लाती है। यह जानकर, यीशु ने एक बार कहा था, "से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे?" — अपने निर्माता के विशेषाधिकार पर नहीं मानते हुए, लेकिन सभी के पिता और माता को पहचान कर, जो मनुष्य को खिलाने और कपड़े पहनने में सक्षम है, जैसे वह गेंदे के साथ करता है।

7. 494: 10-19

ईश्वरीय प्रेम हमेशा से मिला है और हमेशा हर मानवीय आवश्यकता को पूरा करेगा। यह कल्पना करना ठीक नहीं है कि यीशु ने दिव्य शक्ति का चयन केवल संख्या के लिए या सीमित समय के लिए ठीक करने के लिए किया, क्योंकि सभी मानव जाति के लिए और सभी समयों में, दिव्य प्रेम सभी अच्छे की आपूर्ति करता है।

कृपा का चमत्कार प्रेम का कोई चमत्कार नहीं है। यीशु ने शारीरिक शक्ति के साथ-साथ आत्मा की असीम क्षमता की अक्षमता का प्रदर्शन किया, इस प्रकार मानव भावना को अपने स्वयं के दोषों से भागने में मदद करने और दिव्य विज्ञान में सुरक्षा की तलाश करने के लिए।

8. 204: 30 (आस्था)-6

यह विश्वास कि ईश्वर पदार्थ में रहता है, सर्वेश्वरवादी है। त्रुटि, जो कहती है कि आत्मा शरीर में है, मन पदार्थ में है, और अच्छाई बुराई में है, इसे अनकहा करना चाहिए और इस तरह के बयानों से बचना चाहिए; नहीं तो परमेश्वर मानवजाति से छिपा रहेगा, और नश्वर यह जाने बिना पाप करेंगे कि वे पाप कर रहे हैं, आत्मा के बजाय पदार्थ पर निर्भर रहेंगे, लंगड़ापन से ठोकर खाएंगे, पियक्कड़पन से गिरेंगे, बीमारी से भस्म होंगे, - यह सब उनके अंधेपन के कारण होगा, परमेश्वर और मनुष्य के विषय में उनकी झूठी समझ के कारण।

9. 60: 29-3

आत्मा के पास आत्मा को प्राप्त करने के लिए अनंत संसाधन हैं, और खुशी अधिक आसानी से प्राप्त की जाएगी और हमारे रखने में अधिक सुरक्षित होगी, अगर आत्मा में मांग की जाए। अकेले उच्च आनंद अमर आदमी के लालसा को संतुष्ट कर सकते हैं। हम व्यक्तिगत समझदारी की सीमा के भीतर खुशी का संचार नहीं कर सकते। इंद्रियां वास्तविक आनंद नहीं देती हैं।

10. 280: 1 केवल, 6-8, 30-4

मन की अनंतता में, सामग्री को अज्ञात होना चाहिए।... सुंदर और हानिरहित सभी चीजें मन के विचार हैं। मन उन्हें बनाता है और गुणा करता है, और उत्पाद को मानसिक होना चाहिए।

मानवीय मतों का मनोरंजन करने और विज्ञान होने को अस्वीकार करने का एकमात्र बहाना हमारी आत्मा का नश्वर अज्ञान है, - अज्ञान जो केवल दिव्य विज्ञान की समझ के लिए उपजता है, वह समझ जिसके द्वारा हम पृथ्वी पर सत्य के राज्य में प्रवेश करते हैं और सीखते हैं कि आत्मा अनंत और सर्वोच्च।

11. 519: 11-21

मानवीय क्षमता ईश्वर की रचना और उसके साथ जाने वाली ईश्वरीय शक्ति और उपस्थिति को समझने और उसकी आध्यात्मिक उत्पत्ति को प्रदर्शित करने के लिए धीमी है। नश्वर कभी भी अनंत को नहीं जान सकते, जब तक कि वे प्राचीन मानवता को नहीं छोड़ते और आध्यात्मिक छवि और समानता तक नहीं पहुंचते। अनंत को क्या माप सकता है! प्रेरित की भाषा में, हम उसे कैसे घोषित करेंगे, जब तक कि "हम सब के सब विश्वास, और भगवान के पुत्र की पहिचान में एक न हो जाओ, और एक सिद्ध पुरुष न बन जाओ और मसीह के पूरे सौदे डौल तक न बढ़ जाओ!"?

12. 265: 3-15

मनुष्य आध्यात्मिक अस्तित्व को उसी अनुपात में समझता है जैसा कि सत्य और प्रेम के खजाने हैं। मनुष्यों को ईश्वर के प्रति समर्पण करना चाहिए, उनका स्नेह और उद्देश्य आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए, - उन्हें होने की व्यापक व्याख्याओं के पास होना चाहिए, और अनंत के कुछ उचित अर्थों को प्राप्त करना चाहिए, - ताकि पाप और मृत्यु दर को दूर किया जा सके।

किसी भी तरह से, आत्मा के लिए कुछ भी होने का यह वैज्ञानिक अर्थ, मनुष्य को देवता में अवशोषण और उसकी पहचान के नुकसान का सुझाव देता है, लेकिन मनुष्य में बढ़े हुए व्यक्तित्व, विचार और कर्म का व्यापक क्षेत्र, एक अधिक विस्तृत प्रेम, एक उच्च और अधिक स्थायी शांति।

13. 264: 15-19

जब हम महसूस करते हैं कि जीवन आत्मा है, तो कभी भी नहीं, न ही इस मामले में, यह समझ आत्म-पूर्णता में विस्तारित होगी, सभी को ईश्वर में मिल जाएगी, अच्छा होगा, और किसी अन्य चेतना की आवश्यकता नहीं होगी।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6